क्या आपने नानी की सतमुखी बाँसुरी देखी है?

लेखनः डॉन मैकमिलन, चित्रः मैलिसा वैब

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

क्या आपने नानी की सतमुखी बाँसुरी देखी है?

लेखनः डॉन मैकमिलन

चित्रः मैलिसा वैब

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

होसे बड़े पहाड़ों के पास बसे एक गाँव में रहता था।

रात को वह नानी से उनके बचपन की कहानियाँ सुना करता था।

जब नानी बहुत छोटी-सी थी वह अक्सर पहाड़ों पर जाती थी, जहाँ मैदान खुशबूदार फूलों से अटे होते थे। वहाँ नानी लकड़ी से बनी अपनी छोटी सतमुखी बाँसुरी बजा हवा को संगीत सुनाया करती थी।

एक दिन नानी ने एक छोटे-से लामा को चट्टानों पर चढ़ते देखा और अपनी बाँसुरी नीचे रख उसका पीछा करने लगी।

"पर जब मै वापस लौटी, मुझे मेरी बाँसुरी मिली ही नहीं," नानी ने ठंडी उसाँस छोड़ कहा।

"मैं तुम्हारी बाँसुरी ढूंढ़ लाऊंगा नानी," होसे बोला।

"इतने समय बाद उसे ढूंढ़ना मुश्किल होगा मेरे बच्चे," नानी ने होसे के गाल को हौले से सहलाते कहा।

कुछ आगे बढ़ने पर उसे एक लकड़हारा नज़र आया, जो उसकी ओर ही बढ़ा आ रहा था। होसे ने उसे सलाम किया और पूछा, "बाबा, क्या आपने मेरी नानी की बाँसुरी देखी है? वह सालों पहले पहाड़ों के पास खो गई थी।"

"मुझे तुम्हारी नानी की बाँसुरी अच्छे से याद है। उसका संगीत ऐसा था मानों टहनियों के बीच हवा सरसरा रही हो।"

होसे ने नज़रें उठा पेड़ को देखा और उसे लगा कि पेड़ की टहनियाँ नानी की सतमुखी बाँसुरी का आकार बना रही हैं।

पर होसे अगली ही सुबह नानी की बाँसुरी की तलाश में निकल पड़ा। कुछ ही दूर पर उसे नानी की एक पड़ौसन मिली।

"सलाम!" होसे ने उनका अभिवादन किया। "क्या आपने नानी की बाँसुरी देखी है, वह कई सालों पहले पहाड़ों के पास खो गई थी।"

"मुझे तुम्हारी नानी की बाँसुरी याद है," पड़ौसन ने हुलस कर कहा। "उसका संगीत ऐसा था मानो कंकड़ों पर पानी की धार गिरने के बाद कलकल बह रही हो।"

होसे ने कंकड़ों पर पानी की धार गिरते सुनी और नानी की बाँसुरी से निकलते संगीत की कल्पना की।
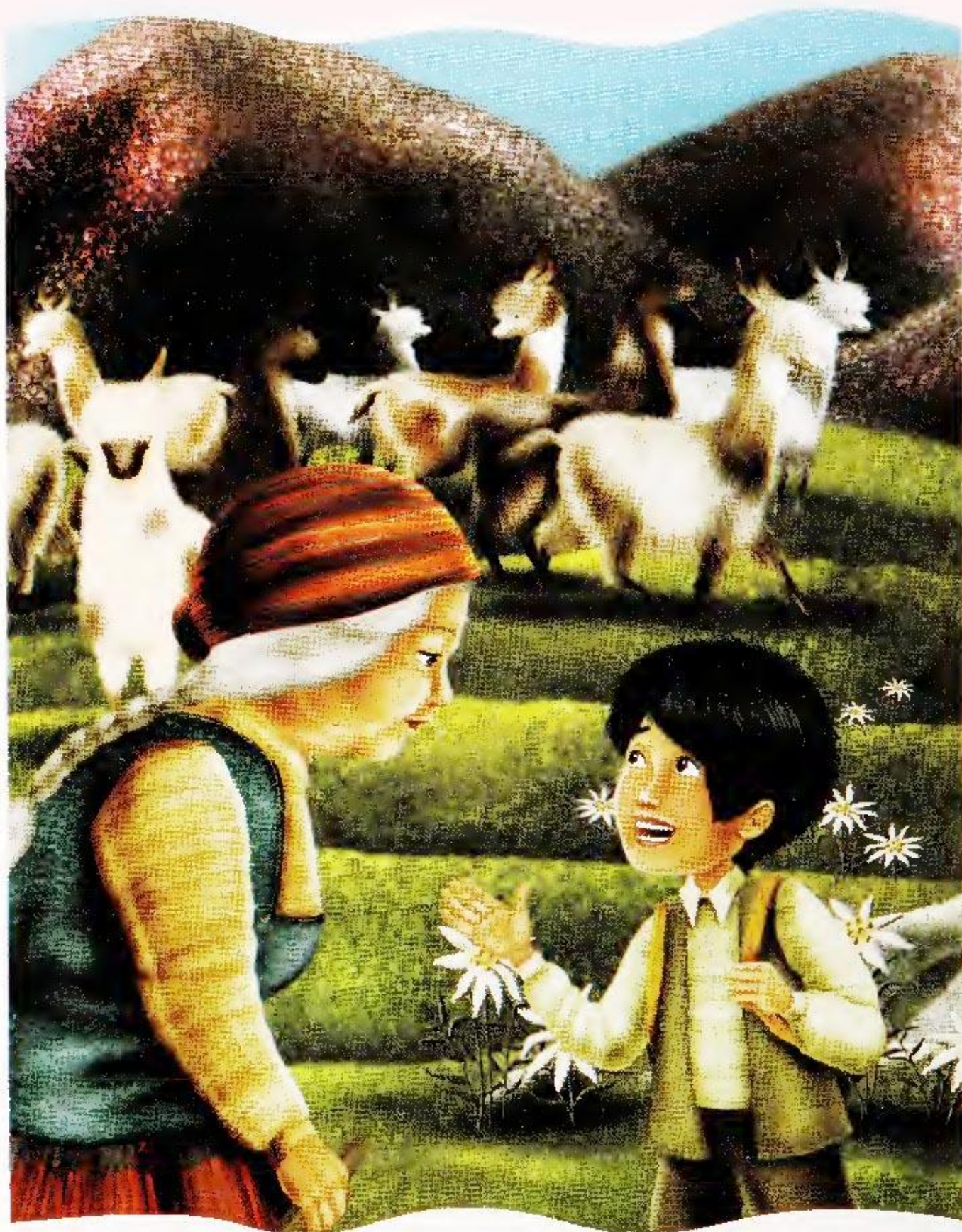
होसे अब पहाड़ पर चढ़ा। एक चरवाहन को देख उसे सलाम किया और पूछा, "क्या आपने मेरी नानी की बाँसुरी देखी है? वह कई सालों पहले पहाड़ों के पास खो गई थी।"

"ओह, मुझे तुम्हारी नानी की बाँसुरी बखूबी याद है," चरवाहन ने जवाब दिया। "उसका मधुर संगीत इन पहाड़ों में गूंज़ा करता था।"

"तुम इस पगडंडी पर चलते हुए अगले गाँव तक जाओ," चरवाहन ने सुझाया। "वहाँ एक अक्लमन्द सुथार है, जो शायद तुम्हारी मदद कर सके।"

होसे को वह सुथार धूप में बैठा मिला। वह एक लकड़ी के टुकड़े को तराश रहा था। होसे ने दुआ-सलाम के बाद सुथार से कहा, "सुथार बाबा, नानी की बाँसुरी तलाशने में मेरी मदद कीजिए। वह कई सालों पहले पहाड़ों के पास खो गई थी।"

"हम्म्म," सुथार ने कहा। तब एक लम्बी चुप्पी के बाद उसने गहरी साँस छोड़ी, "बरखुरदार तुम्हारी नानी की बाँसुरी तो हमेशा के लिए खो चुकी है। पर उसका संगीत नहीं खोया। उस संगीत को तुम पानी की धारा की कलकल में, पेड़ों की टहनियों और नरकट की सरसराहट में सुन सकते हो। तुम्हें वह पहाड़ों के बीच गूंजता सुनाई दे सकता है। तुम ऐसा करो, अपनी नानी के लिए मेरी ओर से एक तोहफ़ा ले जाओ।"

सुथार ने होसे को एक छोटी सतमुखी बाँसुरी दी जो उसने खुद तराश कर बनाई थी।

"शुक्रिया सुथार बाबा," होसे खुशी से चहका। उसने बाँसुरी सावधानी से अपने झोले में रखी, और बोला, "अब नानी अपना सुन्दर संगीत फिर से बजा सकेगी।"

होसे अपने गाँव की ओर दौड़ा और धड़ाम से घर में घुसा।

"नानी आपके लिए एक ऐसा तोहफ़ा लाया हूँ, जो आपको हैरत में डाल देगा।"

उसने झोले से बाँसुरी निकाली और नानी की गोद में रख दी।
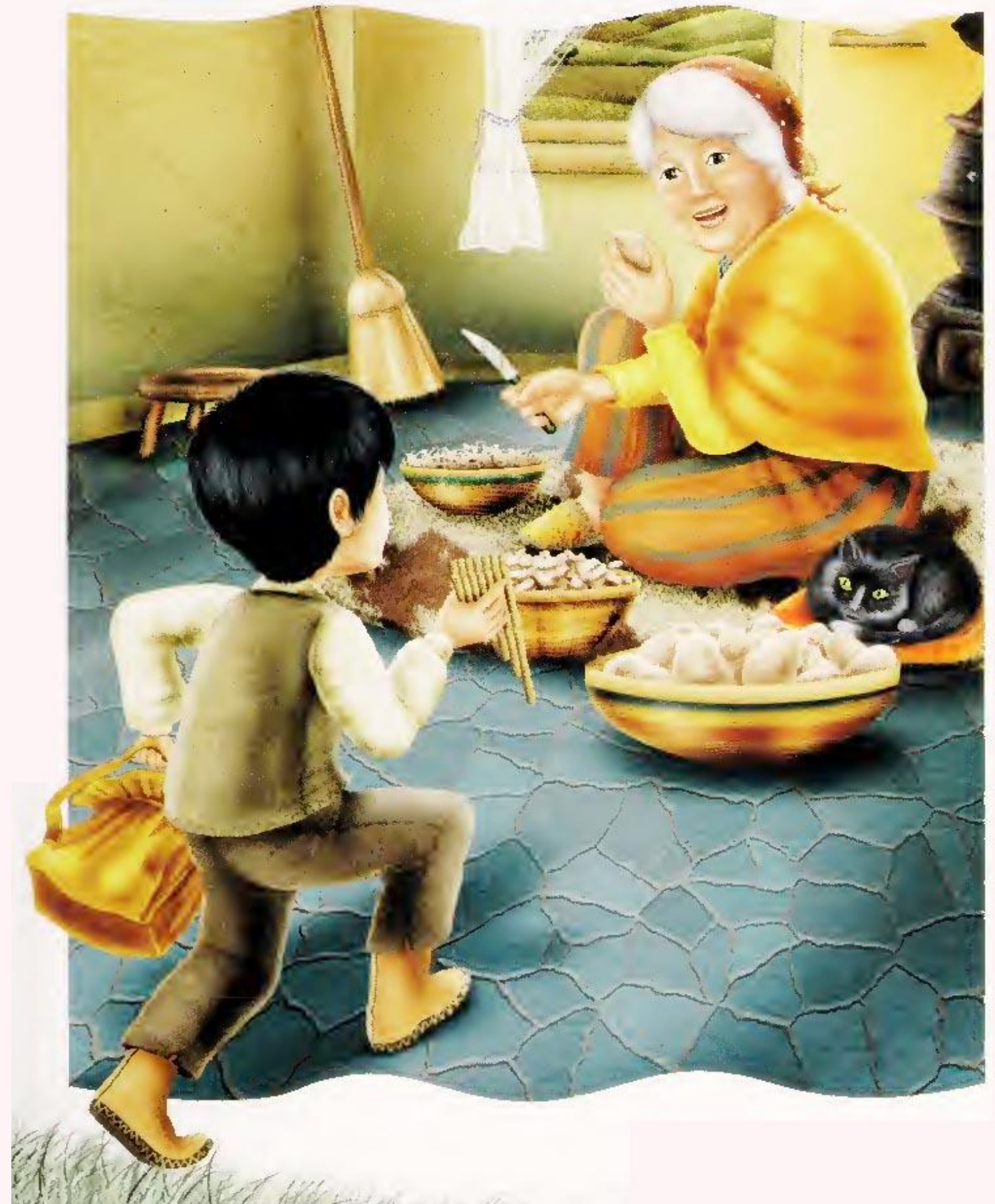
“शुक्रिया होसे!” नानी ने कहा। उनका चेहरा खुशी से दमक रहा था।

“अब मैं तुम्हें भी बाँसुरी बजाना सिखा सकूंगी। और शायद एक दिन तुम्हारा संगीत भी इन पहाड़ों के बीच गूंजेगा, जैसे सालों पहले मेरा गूंजा करता था।”